

## डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 10, स्रोत और रूप आलोचना

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

हम पिछले सत्र में हेर्मेनेयुटिक्स और बाइबिल व्याख्या को देख रहे थे, और आज हम ऐतिहासिक आलोचना से संबंधित मुद्दों को देखेंगे, और हमने कहा कि हेर्मेनेयुटिक्स तार्किक रूप से लेकिन ऐतिहासिक रूप से तीन प्रमुख चरणों से गुजरता है और आगे बढ़ता है संचार का उद्देश्य लेखक और ऐतिहासिक मामलों और पृष्ठभूमि के मामलों पर ध्यान केंद्रित करना है जो पाठ का निर्माण करते हैं, फिर पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ते हैं जहां पाठ के भीतर अर्थ पाया जाता है, और अंत में पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण पर जहां पाठक प्राथमिक होता है अर्थ और पाठ और पाठ का अर्थ बनाने के लिए जिम्मेदार। लेकिन हम पहले चरण की ओर देख रहे हैं जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिक आलोचना है। उसके तहत, हमने कहा कि ऐतिहासिक आलोचना एक छतरी की तरह है जिसके तहत कई प्रकार के अध्ययन शामिल हैं जैसे कि किसी पुस्तक के लेखक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मूल पाठकों और उनकी परिस्थितियों, पाठ के भीतर विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भों को देखना। लेकिन हम उन तीन अन्य दृष्टिकोणों पर भी विचार करना चाहते हैं और उन पर विचार करना शुरू करना चाहते हैं जो ऐतिहासिक प्रकार के दृष्टिकोणों के अंतर्गत आते हैं और हैं, और पहला स्रोत आलोचना है जिसे हमने पिछले सत्र में बहुत संक्षेप में पेश किया था, और हमने कहा कि स्रोत आलोचना एक है वह पद्धति जो पाठ के पीछे जाने और लिखित स्रोतों को उजागर करने का प्रयास करती है, वे दस्तावेज़ जो लेखकों ने अपनी रचनाओं में उपयोग किए हैं, और हमने विशेष रूप से एक पाठ को देखा, ल्यूक अध्याय 1, छंद 1 से 4, जहां लेखक स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कुछ हद तक पिछले स्रोतों, लिखित स्रोतों पर निर्भर।

हमने पुराने नियम में ऐसे उदाहरण देखे हैं जहां वर्णनकर्ता लिखित स्रोतों पर भरोसा करते हैं और स्पष्ट रूप से स्रोतों पर अपनी निर्भरता का संकेत भी देते हैं, भले ही वे स्रोत अब उपलब्ध न हों। लेकिन उसके कारण, स्रोत आलोचना उन संभावित लिखित स्रोतों को उजागर करने या पुनर्निर्माण करने के प्रयास के रूप में विकसित हुई जो पुराने नए नियम के दस्तावेजों के पीछे छिपे हुए हैं, और इसलिए धारणा यह है कि बाइबिल के लेखक ऐतिहासिक स्रोतों पर भरोसा

करते थे और विभिन्न लिखित स्रोतों पर भरोसा करते थे। उनकी अपनी रचना के लिए, स्रोत आलोचना के पुराने और नए टेस्टामेंट से कुछ उदाहरण देना या यह कैसे विकसित हुआ और यह कैसे काम करता है, और फिर शायद विधि के मूल्यांकन के माध्यम से कुछ बातें कहना।

सबसे पहले, पुराने नियम पर, हम पहले ही विचार कर चुके हैं और इतिहास की पुस्तक का पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, उदाहरण के लिए, जब हमने इस तथ्य पर चर्चा की कि बाद के पुराने नियम के लेखक कभी-कभी पहले के पुराने नियम के लेखों और ग्रंथों को उठाते हैं और उनकी पुनर्व्याख्या करते हैं और उन्हें अपने लिए पुनः स्थापित करते हैं। स्वयं का पाठक वर्ग, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम और द्वितीय क्रॉनिकल्स ने पहले और दूसरे राजाओं की सामग्री को एक स्रोत के रूप में लिया है, हालाँकि लेखक फिर से इसे अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करता है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम और द्वितीय किंग्स एक ऐसा स्रोत है जिसे प्रथम और द्वितीय क्रॉनिकल्स के लेखक ने लिया है। अपने लेखन के लिए, उदाहरण के लिए, जब आप तुलना करते हैं, तो एक पाठ का उपयोग करने के लिए जिसके बारे में हम बाद में भी बात करेंगे, लेकिन जब आप पहले और दूसरे इतिहास पर ध्यान देते हैं और किसी अन्य दस्तावेज़ या किसी अन्य पुस्तक, विशेष रूप से पहले इतिहास और अध्याय 17 से संबंध भी देखते हैं, जो कविता से शुरू होता है 10 मैं तुम से कहता हूँ, कि यहोवा तुम्हारे लिये घर बनाएगा।

जब तेरे दिन पूरे हो जाएंगे और तू अपने पुरखाओं के पास जाएगा, तब मैं तेरे वंश को, अर्थात् तेरे ही पुत्रों में से एक को, तेरे स्थान पर खड़ा करूँगा, और उसका राज्य स्थापित करूँगा। वह वही है जो मेरे लिये घर बनाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा। मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

मैं उनसे अपना प्यार कभी नहीं छीनूँगा, जैसे मैंने आपके पूर्ववर्ती से लिया था। मैं उसे अपने घर और अपने राज्य पर सदैव के लिये नियुक्त करूँगा। उसका सिंहासन सदैव स्थिर रहेगा।

और फिर श्लोक 15 यह कहते हुए समाप्त होता है, नाथन ने डेविड को इस पूरे रहस्योद्घाटन के सभी शब्दों के बारे में बताया। आप शायद उस भाषा को पहचानते हैं जिसे मैंने अभी दूसरे पाठ

से पढ़ा है, और वह दूसरा सैमुअल अध्याय 7 है, जहां दूसरे सैमुअल 7, 14 में, और दूसरे सैमुअल 7, 14 से पहले के छंद उस वाचा का हिस्सा हैं जिसे भगवान बनाते हैं। दाऊद भविष्यवक्ता नाथन के माध्यम से बोल रहा है। लेकिन यदि आप पीछे जाएं और दोनों पाठों को एक साथ पढ़ें, दूसरा सैमुअल 7 और फिर पहला इतिहास 17, तो आप देखेंगे कि कई स्थानों पर शब्दांकन लगभग समान और बहुत समान है, इसलिए फिर से, सबसे अधिक संभावना है कि पुस्तकों में से एक कार्य करती है दूसरे के लिए एक स्रोत।

लेखक ने, एक लेखक ने दूसरे को अपनी रचना के स्रोत के रूप में तैयार किया है। लेकिन हम प्रदर्शित करने के लिए इस पाठ को फिर से उठाएंगे, और यह अन्य तरीकों में से एक में शामिल हो जाएगा जिसे संशोधन आलोचना के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, लेखक, जब वे अपने स्रोतों का उपयोग करते हैं, तो वे उन्हें अपने स्वयं के उद्देश्यों और अपने स्वयं के इरादों के लिए उपयोग करते हैं, और यह एक बाद की विधि है जिस पर हम चर्चा करेंगे, आलोचना में संशोधन, सवाल पूछता है, लेखक ने स्रोत को कैसे लिया है? इतिहास के लेखक ने अपने स्रोतों को कैसे लिया है और अब उन्हें अपने उद्देश्यों और अपने इरादों के लिए उपयोग किया है? लेकिन यहां मुद्दा यह प्रदर्शित करना है कि शब्दों और यहां तक कि सामग्री की समानता के कारण, स्पष्ट रूप से बाइबिल के लेखक अपनी रचना में पहले के स्रोतों, यहां तक कि पहले के बाइबिल स्रोतों को लेते हैं और उनका उपयोग करते हैं।

शायद पुराने नियम के अध्ययनों में उत्कृष्ट उदाहरण उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में सृजन कथा से आता है, और वास्तव में इसे पूरे पेंटाटेच, पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों को शामिल करने के लिए बढ़ाया जा सकता है। हालाँकि, उत्पत्ति 1 और 2, पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों के केवल एक पहलू पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, उत्पत्ति 1 और 2 दो अलग-अलग सृजन कथाओं, दो अलग-अलग सृजन कहानियों का विवरण है, और जो दिलचस्प है वह बैक-टू-टू है - बैक में आपके पास दो कहानियाँ होंगी जो बहुत समान हैं, फिर भी वे अलग-अलग अंतर भी प्रकट करती हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और 2 में, कुछ विद्वानों ने रचना के विभिन्न भागों को दर्ज करने के तरीके में शैली में अंतर या क्रम में अंतर पर ध्यान दिया है।

उन्होंने अध्याय 1 और 2 में भगवान के लिए इस्तेमाल किए गए अलग-अलग नामों को भी नोट किया है, और उसके कारण, स्रोत आलोचना के सुनहरे दिनों में कुछ पहले, और आज भी आप कभी-कभी ऐसा होता हुआ पाते हैं, क्या पुराने नियम के विद्वान आश्चर्य हैं कि वे सृजन कथा के अलग-अलग खातों में उत्पत्ति 1 और 2 के पीछे दो अलग-अलग स्रोतों को अलग कर सकता है, और फिर एक बाद के लेखक ने इन दो स्रोतों को ले लिया है और अब उन्हें अपने खाते में एक साथ रखेगा। पुनः, इस अंतर्दृष्टि को संपूर्ण पेंटाटेच में विस्तारित किया गया है। आपने सुप्रसिद्ध जेईपीडी सिद्धांत के बारे में सुना होगा।

वे अक्षर जे, ई, पी, और डी ऐसे अक्षर हैं जिनका उद्देश्य पूरे पेंटाटेच में मौजूद चार अलग-अलग स्रोतों को लेबल करना है, और उदाहरण के लिए, जे यहोवा का पहला नाम है, और संभवतः एक लेखक था जिसने लिखा था, विशेष रूप से उपयोग करते हुए यहोवा का नाम, जिसने एक निश्चित परिप्रेक्ष्य से एक स्रोत लिखा था, और उदाहरण के लिए, अक्षर डी, ड्यूटेरोनोमिक परिप्रेक्ष्य के लिए खड़ा है, कि ड्यूटेरोनोमिक पुस्तक के परिप्रेक्ष्य से लिखने वाले किसी व्यक्ति ने पेंटाटेच के कुछ हिस्सों की रचना की है। तो मुद्दा यह है कि, ऐतिहासिक रूप से, आपके पास चार अलग-अलग स्रोत हैं जो लेखकों द्वारा लिखे गए थे, और फिर, विद्वानों ने उन्हें जे स्रोत, ई स्रोत, डी स्रोत, और फिर पी स्रोत, पी को पुरोहित दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए लेबल किया है। उदाहरण के लिए, और विद्वानों को विश्वास हो गया है कि वे चार अलग-अलग स्रोतों को अलग कर सकते हैं, और वे इससे भी आगे बढ़ गए हैं, और उन्होंने उन्हें दिनांकित किया है और इन स्रोतों की मूल संरचना के लिए एक सेटिंग भी प्रदान की है, लेकिन अब, बहुत बाद में, एक लेखक ने इन चार अलग-अलग स्रोतों को लिया है और उन्हें एक साथ जोड़कर अंतिम रूप दिया है जिसे हम पेंटाटेच कहते हैं। मेरा उद्देश्य यह नहीं है, हालाँकि मैं आवश्यक रूप से इसकी सदस्यता नहीं लेता, मेरा उद्देश्य इसका मूल्यांकन करना नहीं है, लेकिन जाहिर तौर पर आप कुछ ऐसे प्रश्न देखना शुरू कर सकते हैं जो उठ सकते हैं, अर्थात्, हम किन मानदंडों के आधार पर स्रोतों को अलग करते हैं, और दिलचस्प बात यह है कि पिछले विद्वान स्रोतों को अलग करने के लिए जिन मानदंडों का उपयोग करते थे उनमें से कुछ का उपयोग अन्य लोग पाठ की एकता को प्रदर्शित करने के लिए करते हैं।

साथ ही, कभी-कभी मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि किसी काल्पनिक तारीख और एक काल्पनिक समुदाय या स्थिति का पुनर्निर्माण शुरू करना अटकलों पर आधारित है जिसने स्रोत को जन्म दिया , आदि, आदि, इसलिए मेरा मुख्य उद्देश्य सिर्फ यह प्रदर्शित करना है कि स्रोत की आलोचना कैसी रही है अंतर्निहित लिखित स्रोतों को अलग करने की कोशिश में उपयोग किया जाता है जिन्हें बाद के लेखक ने अब उठाया है। फिर, कभी-कभी क्रॉनिकल्स एंड किंग्स एंड सैमुअल जैसी किताब में, दस्तावेज़ों के बीच एक निश्चित संबंध प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ने दूसरे के स्रोत के रूप में कार्य किया है।

हालाँकि, जब पेंटाटेच की बात आती है, तो यह अधिक काल्पनिक है। जेईपीआरडी के अस्तित्व तक किसी की भी पहुंच नहीं है, इस तथ्य के विपरीत कि हमारे पास पहले और दूसरे राजा हैं, और हमारे पास सैमुअल हैं, और हमारे पास इतिहास हैं, या हमारे पास लेखक के राजाओं के संदर्भ हैं जो स्पष्ट रूप से यहूदा के राजा के इतिहास को आकर्षित करते हैं। , या कुछ इस तरह का। लेकिन स्रोत आलोचना ने पुराने नियम के पाठ के अंतर्निहित स्रोतों को अलग करने और उनका विश्लेषण करने और पुनर्निर्माण करने में पुराने नियम की विद्वता में भूमिका निभाई।

आप यह भी देखना शुरू कर सकते हैं कि इसका कितना भी मूल्य क्यों न हो, स्रोत आलोचना ने उस पद्धति को रास्ता दे दिया है जिसका हमने थोड़ा पहले उल्लेख किया था, पुनर्लेखन आलोचना जो स्रोतों के पुनर्निर्माण पर ज्यादा ध्यान केंद्रित नहीं करती है, बल्कि इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करती है कि हमें इससे निपटना चाहिए पाठ जैसा कि हमारे पास है। हमारे पास जो कुछ है वह संपूर्ण पेंटाटेच है, और इसलिए किसी को अंततः उस पाठ से निपटना चाहिए न कि केवल उन काल्पनिक स्रोतों से जिन्हें अलग किया जा सकता है या विश्लेषण किया जा सकता है जो अब अंतिम रचना में शामिल किए गए प्रतीत होते हैं। नए नियम में, स्रोत आलोचना का उत्कृष्ट उदाहरण संभवतः सिनोप्टिक गॉस्पेल, पहले तीन गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक हैं।

और इसका कारण किंग्स एंड क्रॉनिकल्स और सैमुअल की स्थिति के समान है। विशेष रूप से पहले तीन गॉस्पेल, हालांकि इसमें शामिल कुछ सामग्रियों, शब्दों और उपयोग की जाने वाली भाषा में जॉन बहुत अलग हैं, पहले तीन गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, के बीच कुछ प्रकार के

संबंध का संकेत देते प्रतीत होते हैं। तीन, हालाँकि हम इसे समझाते हैं। इसलिए जब आप मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि न केवल मसीह के जीवन की दर्ज की गई घटनाओं और यीशु की कही बातों और शिक्षाओं की सामग्री में समानता है, बल्कि वे एक में घटित होते हैं। मोटे तौर पर समान क्रम, कभी-कभी एक समान क्रम, लेकिन उससे भी आगे, जब आप मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की तुलना करना शुरू करते हैं, तो शब्दांकन कुछ स्थानों पर लगभग समान होता है, और इस हद तक कि यदि मेरा कोई भी छात्र कागजात, शोध पत्र तैयार करता है, जो क्रम और शब्दों में उसी हद तक सहमत है जैसा कि सिनोप्टिक गॉस्पेल में है, मुझे किसी प्रकार के सहयोग और किसी प्रकार के उधार पर संदेह होगा जो कि छात्रों में से एक ने दूसरे से उधार लिया होगा, या शायद वे दोनों एक समान दस्तावेज़ से उधार लिए होंगे, या एक समान पूर्व शोध पत्र।

आपको केवल एक उदाहरण देने के लिए, और सिनोप्टिक गॉस्पेल इनमें से भरे हुए हैं, मैथ्यू अध्याय 3 और 7 और 9 में, हम मैथ्यू अध्याय 3 और ल्यूक अध्याय 3 के एक पाठ की भी तुलना करेंगे। मैथ्यू अध्याय 3 और छंद 7 में, मैं 7 से 10 तक पढ़ना चाहता हूँ। मैथ्यू 3, 7 से 10, लेकिन जब उसने कई फरीसियों और सद्कियों को अपने पास आते देखा, जहां वह था, वहां आते हुए, उसने, यानी यीशु ने कहा हे सांप के बच्चों, तुम्हें किस ने चिताया, कि आनेवाले क्रोध से भागो? मन फिराव के अनुसार फल उत्पन्न करो, और यह न सोचो कि तुम अपने आप से कह सकते हो, कि हमारा पिता इब्राहीम है।

मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ी चल चुकी है, और जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, उसे काट दिया जाएगा और आग में फेंक दिया जाएगा। अब लूका अध्याय 3 और 7 से 9 तक सुनो। यूहन्ना ने बपतिस्मा लेने के लिये आनेवाली भीड़ से कहा, हे सांप के बच्चों, तुम्हें किस ने चिताया, कि आनेवाले क्रोध से भागो? मन फिराव के अनुसार फल उत्पन्न करो, और यह न सोचो कि तुम अपने आप से कह सकते हो, कि हमारा पिता इब्राहीम है।

मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। पेड़ों की जड़ पर कुल्हाड़ी चल चुकी है, और जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, उसे काट दिया जाएगा और आग में फेंक दिया जाएगा। उन दोनों में आपके पास जॉन द बैपटिस्ट है, मुझे लगता है कि मैंने मैथ्यू के साथ यीशु को कहा है, लेकिन उन दोनों में आपके पास जॉन द बैपटिस्ट है जो फरीसियों से बात कर रहा है, और ध्यान दें कि यह मानते हुए कि जो अंग्रेजी अनुवाद मैंने अभी पढ़ा है वह दोनों में ग्रीक पाठ को दर्शाता है मामलों में, ध्यान दें कि शब्दांकन समान था, न केवल उद्धृत शब्दों में, बल्कि कुछ कथा में भी।

अब जब विद्वानों ने ऐसा कुछ पढ़ा है, तो यह सवाल उठता है कि हम इसे कैसे समझाएँ? हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानताओं को कैसे समझा सकते हैं? फिर, जॉन बहुत अलग है, लेकिन मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, हम मतभेदों को कैसे समझाते हैं? फिर, इस तथ्य से नहीं कि वे कभी-कभी समान घटनाओं और उसी क्रम में रिकॉर्ड करते हैं, बल्कि शब्दांकन लगभग समान होता है। इसे कैसे समझाया जाना चाहिए? खैर, अधिकांश न्यू टेस्टामेंट छात्रों ने यह समझाने की कोशिश की है कि किसी प्रकार के रिश्ते के कारण, या तो, उदाहरण के लिए, एक स्पष्टीकरण यह है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की संभवतः एक ही स्रोत तक पहुंच थी, या शायद मौखिक परंपरा भी। यानी, वे तीनों एक ही जानकारी पर भरोसा कर रहे हैं जो उन्हें दी गई है।

यह एक संभावना है। हालाँकि, तथ्य यह है कि शब्दांकन इतना करीब है कि विद्वानों ने तीनों के बीच एक साहित्यिक संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। कभी-कभी हमने कई सत्र पहले प्रेरणा के मौलिक दृष्टिकोण के बारे में बात की थी।

कुछ लोग कहेंगे कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वे प्रेरित हैं कि वे तीनों एक जैसा लिखते हैं। समस्या यह है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच पाए जाने वाले कुछ अंतरों का कोई हिसाब नहीं है। तो हम इसे कैसे समझाएँ? सबसे लोकप्रिय दृश्य स्रोत-आलोचनात्मक है।

अर्थात्, मैथ्यू मार्क या ल्यूक, सिनोप्टिक्स में से एक, अन्य दो के लिए स्रोत के रूप में कार्य करता है। अर्थात्, सुसमाचार के दो लेखक एक दूसरे से उधार ले रहे हैं। और इसने कई सिद्धांतों को जन्म दिया है जिनके बारे में मैं अधिक विस्तार में जाने का इरादा नहीं रखता।

लेकिन इसकी शुरुआत में एक बहुत लोकप्रिय बात अभी भी है, मुझे लगता है कि यह ऑगस्टाइन तक जाती है, और आज भी कुछ लोगों द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि मैथ्यू पहले लिखा गया था। और फिर ल्यूक और मार्क ने मैथ्यू से उधार लिया, मैथ्यू को अपने स्रोत के रूप में उपयोग किया। अब जाहिर है, विशेष रूप से ल्यूक के पास बहुत सारी सामग्री है जो मैथ्यू में नहीं है, और मार्क के पास थोड़ी सी सामग्री है जो मैथ्यू में नहीं है।

और ल्यूक के पास बहुत सारी सामग्री है जो आपको मार्क में नहीं मिलती। तो जाहिर तौर पर ल्यूक ने जानकारी जोड़ी। यदि आप अध्याय 1, 1-4 पर वापस जाएं, जहां वह प्रत्यक्षदर्शी खातों और अन्य दस्तावेजों के बारे में जानता है, तो ल्यूक स्पष्ट रूप से अपनी खुद की कुछ सामग्री शामिल करता है जो मैथ्यू या मार्क में नहीं है।

लेकिन वह एक बहुत ही सामान्य व्याख्या थी। मैथ्यू ने पहले लिखा, मार्क और ल्यूक ने मैथ्यू का उपयोग किया। और कुछ अन्य सिद्धांत भी रहे हैं।

लेकिन जिस बात पर मैं संक्षेप में ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं वह सबसे आम व्याख्या है जिसे संभवतः अधिकांश नए नियम के विद्वान और छात्र मानते हैं जिसे मार्कियन प्राथमिकता के रूप में जाना जाता है। वह यह है कि मार्क का सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया होगा, और मैथ्यू और ल्यूक दोनों ने एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से मार्क का उपयोग किया होगा। इसलिए हम मैथ्यू और ल्यूक को एक साथ बैठे हुए चित्रित नहीं कर रहे हैं, दोनों मार्क का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से, मैथ्यू और ल्यूक के पास मार्क की एक प्रति होगी, और उन्होंने उस सुसमाचार को अपने लिए आधार के रूप में इस्तेमाल किया होगा।



फिर से, आपको मैथ्यू और ल्यूक सहित बहुत सारी जानकारी मिलती है जो मार्क में नहीं है। मैथ्यू के पास बहुत सारे दृष्टान्त हैं जो आपको मार्क में कहीं नहीं मिलेंगे। ल्यूक के पास बहुत सारे दृष्टान्त हैं जो आपको मार्क या मैथ्यू में नहीं मिलते हैं।

मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास पहाड़ी उपदेश है। वह आपको मार्क में कहीं भी नहीं मिलता। तो सिद्धांत यह है कि मैथ्यू और ल्यूक दोनों मार्क का उपयोग करते हैं, लेकिन इसमें अन्य सामग्री भी शामिल है, जो ल्यूक के अनुसार, अन्य लिखित दस्तावेजों और स्रोतों से आई हो सकती है, और संभवतः प्रत्यक्षदर्शी गवाही से भी आई है।

और यदि मैथ्यू का लेखक मैथ्यू, यीशु का शिष्य है, तो निस्संदेह मैथ्यू ने इनमें से कई घटनाओं को स्वयं देखा होगा, और उन्हें स्वयं देखा होगा। तो फिर, अधिकांश सहमत हैं कि मार्क पहले लिखा गया था, और मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क का उपयोग किया होगा। इसके कुछ कारण यह हैं कि जब आप तीनों की तुलना करते हैं, तो मार्क का अधिकांश सुसमाचार, लगभग पूरा, मैथ्यू और ल्यूक दोनों में दिखाई देता है।

जबकि यदि आप मानते हैं कि मैथ्यू पहले लिखा गया था, तो मार्क मैथ्यू से बहुत सारी सामग्री हटा देता है, क्योंकि मैथ्यू काफी लंबा है, और इसमें बहुत अधिक सामग्री शामिल है। तो क्या आप देखते हैं कि यदि मार्क, यदि मैथ्यू पहले लिखा गया था, और मार्क ने मैथ्यू या ल्यूक का उपयोग किया, तो उसने बहुत सारी सामग्री छोड़ दी होगी। लेकिन यदि मार्क को पहले लिखा गया है, तो इसका कारण यह है कि मार्क का अधिकांश भाग, यह सब नहीं, बल्कि इसका अधिकांश भाग, मैथ्यू और ल्यूक में उठाया जाएगा।

और यह मार्क की प्राथमिकता के तर्कों में से एक है। कुछ अन्य तर्क यह हैं कि मैथ्यू और ल्यूक, कभी-कभी, मार्क की तुलना में अधिक सहज प्रतीत होते हैं। जहाँ मार्क व्याकरण में थोड़ा छोटा या मोटा हो सकता है, या जिस तरह से वह चीजों को रिकॉर्ड करता है, मैथ्यू और ल्यूक अधिक सहज प्रतीत होते हैं, और सुझाव यह है कि यह अधिक संभावना है कि मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क में उन स्थानों को चिकना कर दिया होगा जिन्हें वे कठिन समझते थे .

या कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि मैथ्यू और ल्यूक धार्मिक रूप से अधिक स्पष्ट हो सकते हैं। यानी, कुछ क्षेत्र जहां मार्क मसीह के देवता या उसके जैसे कुछ, मसीह के व्यक्तित्व के संबंध में कुछ ऐसा कह सकते हैं जिसे धार्मिक रूप से गलत समझा जा सकता है। मैथ्यू और ल्यूक इसे सुचारू करते प्रतीत होते हैं।

मैथ्यू और ल्यूक लगभग कभी नहीं, जब वे दोनों मार्क का जिक्र कर रहे होते हैं, या जब वे दोनों मार्क के समानांतर होते हैं, तो वे कभी भी उससे विचलित नहीं होते हैं, या जिस तरह से वे मार्क को संदर्भित करते हैं, एक दूसरे से विचलित होते हैं। तो फिर, मेरा उद्देश्य कोई तर्क खड़ा करना नहीं है, बल्कि बस यह प्रदर्शित करना है कि कुछ विद्वान ऐसा क्यों सोचते हैं, और जो मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच संबंधों के बारे में शायद सबसे आम दृष्टिकोण के रूप में उभरा है, एक स्रोत-महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है मार्क को मूल स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है। मार्क लिखा गया पहला सुसमाचार था और मैथ्यू और ल्यूक के लिए एक स्रोत के रूप में कार्य किया।

मैथ्यू और ल्यूक के पास तब मार्क तक पहुंच होती और वे अपने स्वयं के सुसमाचार के उत्पादन में मार्क के अधिकांश का उपयोग करते। फिर, उन दोनों के पास प्रत्यक्षदर्शी खातों के माध्यम से अन्य सामग्री और अन्य स्रोतों तक पहुंच थी। और फिर, जैसा कि परंपरा है, मैथ्यू का सुसमाचार वास्तव में यीशु के शिष्य मैथ्यू द्वारा लिखा गया था।

और केवल एक महत्वपूर्ण बात, सुसमाचार को दिए गए शीर्षक, मैथ्यू का सुसमाचार, मार्क का सुसमाचार, ल्यूक का सुसमाचार, वे मूल रूप से दस्तावेजों का हिस्सा नहीं थे। इन्हें बाद में चर्च द्वारा यह पहचानने के प्रयास के रूप में जोड़ा गया कि उन सुसमाचारों के लेखक कौन थे। और यदि वे विश्वसनीय हैं, और मुझे लगता है कि आप एक अच्छा मामला बना सकते हैं कि वे हैं, यदि वे विश्वसनीय हैं, तो फिर, मैथ्यू को यीशु के जीवन और यीशु की शिक्षा के अपने स्वयं के प्रत्यक्षदर्शी अनुभव पर कोई संदेह नहीं होगा।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्हें अन्य सामग्री तक पहुंच प्राप्त होगी जिसे उन्होंने भी शामिल किया होगा। एक और दिलचस्प बात कहने के लिए, बस चित्र को भरने के लिए ताकि यदि आप इस शब्दावली को देखें, तो आप जान सकें कि यह क्या कर रही है, यह है कि आप अक्सर न्यू टेस्टामेंट के छात्रों को क्यू, क्यू स्रोत का जिक्र करते हुए पाएंगे। मूल रूप से वह क्या है, क्यू केवल स्रोत के लिए जर्मन शब्द का पहला अक्षर है, और यह उस सामग्री का वर्णन और संदर्भ देने के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द है जो मैथ्यू और ल्यूक में समान है, लेकिन आप मार्क में नहीं पाते हैं।

जैसे, उदाहरण के लिए, मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास यीशु के जन्म का विवरण है, लेकिन आपको यह मार्क में कहीं भी नहीं मिलता है। मार्क सीधे जॉन द बैपटिस्ट और यीशु की प्रारंभिक सेवकाई में कूद पड़ता है। लेकिन मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास ईसा मसीह के जन्म और उनके बचपन का विवरण है।

मैथ्यू की तुलना में ल्यूक के पास यीशु के शुरुआती बचपन के बारे में कुछ अधिक है। मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास पहाड़ी उपदेश का विवरण है। मार्क नहीं करता।

और कभी-कभी वह सामग्री शब्दांकन में बहुत करीब होती है, इसलिए कई नए नियम के विद्वान सोचते हैं कि मैथ्यू और ल्यूक के पास किसी अन्य स्रोत तक भी पहुंच थी जिसे उन्होंने क्यू लेबल किया है। इसलिए मैथ्यू और ल्यूक मार्क का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके पास भी पहुंच थी, इसके अनुसार किसी अन्य दस्तावेज़ को देखें। कुछ लोग कहेंगे कि यह एक दस्तावेज़ है, अन्य कहेंगे कि हमें नहीं पता कि यह एक दस्तावेज़ था या नहीं, लेकिन फिर भी अक्षर Q उस सामग्री को दर्शाता है जो मैथ्यू और ल्यूक के पास है, जैसे कि सरमन ऑन द माउंट, लेकिन आप नहीं जानते। यह मार्क में मिलेगा। इसलिए क्यू एक अधिक काल्पनिक स्रोत होगा जिस तक उन्हें लगता है कि मैथ्यू और ल्यूक की पहुंच थी।

लेकिन इस सब के आधार पर, अधिकांश लोग यह निष्कर्ष निकालेंगे कि मार्क लिखा गया पहला सुसमाचार था और फिर मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क का उपयोग किया, लेकिन अन्य सामग्री भी,

शायद यह क्यू, जो भी हो, चाहे वह एक विशिष्ट दस्तावेज़ हो या शिक्षण और जानकारी का निकाय हो मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास इसकी पहुंच थी और फिर उन्होंने इसे अपने शिक्षण में उपयोग किया। फिर, कभी-कभी विद्वान एक ऐसे समुदाय का सुझाव देकर थोड़ा रचनात्मक हो जाते हैं जिसने क्यू और एक ऐसी स्थिति का निर्माण किया है, यहां तक कि भौगोलिक रूप से यह भी पता लगाया जा सकता है कि यह कहां से आया है और क्यू का धर्मशास्त्र और वह किस स्थिति को संबोधित कर रहा था, किस तरह की अटकलों पर अटकलें लगती रहती हैं। हम यह भी निश्चित नहीं हैं कि क्यू एक वास्तविक दस्तावेज़ था या नहीं, इसलिए कभी-कभी इस तरह की चीज़ बड़े पैमाने पर चल सकती है या थोड़ी गड़बड़ हो सकती है।

लेकिन जैसा कि मैंने अभी बताया है, सिनॉटिक सुसमाचार, नए नियम में स्रोत आलोचना का प्राथमिक प्रारंभिक बिंदु और प्रवेश बिंदु प्रतीत होता है। और यह फिर से सिनॉटिक गॉस्पेल के बीच समानता के कारण है, इसके लिए एक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है और अधिकांश आश्वस्त हैं कि इसमें एक साहित्यिक संबंध है। उनमें से एक ने दूसरों के लिए स्रोत प्रदान किया।

और फिर, आम बात यह है कि मार्क पहले लिखा गया था और वह अन्य सुसमाचारों का स्रोत था। हालाँकि स्रोत की आलोचना वास्तव में सिनोटिक गॉस्पेल के बाहर भी फैल गई है। हालाँकि कभी-कभी जब आप पुराने टेस्टामेंट के उपचार, नए टेस्टामेंट स्रोत की आलोचना पढ़ते हैं, तो आपको यह आभास हो सकता है कि एकमात्र स्थान जो घटित हो सकता है वह सिनोटिक गॉस्पेल में है।

मैंने स्रोत आलोचना पर कई लेख पढ़े हैं जो सिनॉटिक्स, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बाहर स्रोत आलोचना के बारे में बात नहीं करते हैं। लेकिन अन्य लोगों ने इसका दायरा अधिक व्यापक रखा है और सुझाव दिया है कि नए नियम के अन्य लेखक स्रोतों पर निर्भर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने पॉल के पत्रों में सुझाव दिया है कि कभी-कभी वह पहले से मौजूद स्रोतों या सामग्री का भी उपयोग कर सकता है।

सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध उदाहरणों में से दो, हालांकि बहस में हैं, पॉल के दो पत्रों में पाए जाते हैं, उनमें से एक कुलुस्सियों और दूसरा फिलिप्पियों। मैं फ़िलिपियंस अध्याय दो से संभवतः अधिक सामान्य और अधिक प्रसिद्ध पुस्तक पढ़ूंगा। लेकिन फिलिप्पियों अध्याय दो, अध्याय के ठीक बीच में यह प्रसिद्ध मसीह भजन शामिल है जहां पॉल कहते हैं, जिसने स्वभाव में होने के कारण ईश्वर के साथ समानता को समझने योग्य नहीं समझा, लेकिन स्वभाव को अपनाते हुए खुद को कुछ भी नहीं बनाया एक सेवक के रूप में, मनुष्य की समानता में बनाया गया, और मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, उसने स्वयं को दीन किया और मृत्यु, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक आज़ाकारी रहा।

इस कारण परमेश्वर ने उसे ऊंचे स्थान पर पहुंचाया, और उसे वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे हर एक घुटना यीशु के नाम पर झुके, और हर जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है। परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए. अब दिलचस्प बात यह है कि जिस अंग्रेजी अनुवाद को मैं देख रहा हूं उसमें भी, और सभी अंग्रेजी अनुवाद ऐसा नहीं करते हैं, लेकिन जिस अंग्रेजी अनुवाद को मैं देख रहा हूं वह इन छंदों को काव्यात्मक शैली में, पद्य रूप में स्थापित करता है। और कुछ शायद इस तथ्य को प्रतिबिंबित कर रहे हैं कि कुछ लोग सोचते हैं कि पॉल पहले से मौजूद भजन को उद्धृत कर रहा होगा।

अब बहस चल रही है, कुछ आश्चर्य हैं कि नहीं, पॉल ने इसे स्वयं लिखा है, लेकिन दूसरों को लगता है कि वह एक भजन उधार ले रहा होगा जो पहले से ही प्रसारित हो रहा था और प्रारंभिक चर्च में उपयोग किया गया था। दूसरा पाठ, दूसरा शास्त्रीय पाठ, कुलुस्सियों 1 15 से 20 है, जिसे मैं अभी नहीं पढ़ूंगा, लेकिन दूसरा प्रसिद्ध मसीह भजन जिसके बारे में कुछ अटकलें हैं कि यह एक प्रारंभिक भजन हो सकता है जिसे पॉल स्वयं उद्धृत कर रहा है। पुनः, जिसे चर्च द्वारा उपयोग किया गया था और प्रारंभिक चर्च में प्रसारित किया गया था, और अब पॉल इसे अपनी रचना के लिए एक स्रोत के रूप में उपयोग करता है।

फिर, यह बताना मुश्किल है, और विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि क्या वास्तव में ऐसा है। अन्य संभावित स्रोत, नए नियम में संभावित स्रोत महत्वपूर्ण मुद्दे का एक और उदाहरण 2 पीटर

और जूड के बीच का संबंध है। जब आप 2 पीटर और जूड को पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें ऐसी सामग्री है जो बहुत समान है, लगभग उसी हद तक जैसे मैथ्यू, मार्क और ल्यूक क्रम और सामग्री दोनों में समान हैं, लेकिन शब्दों में भी समान हैं।

इसलिए इस बात पर बहस चल रही है कि क्या रिश्ता हो सकता है, उदाहरण के लिए, 2 पीटर और जूड के बीच। एक सामान्य सिद्धांत यह है कि जूड को पहले लिखा गया था, और 2 पीटर के लेखक ने जूड की सामग्री को अपनी रचना में उपयोग किया, लेकिन अन्य सामग्री भी शामिल की। फिर से, अधिकांश सोचते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि जूड का अधिकांश भाग 2 पीटर में शामिल किया गया है और लिया गया है, इसलिए उन्हें लगता है कि इसकी अधिक संभावना है कि 2 पीटर जूड का उपयोग करेगा और इसमें लगभग सभी को शामिल करेगा, जबकि जूड 2 पीटर का उपयोग करेगा और बहुत कुछ छोड़ देगा। यह बाहर।

इसलिए स्रोत आलोचना केवल सारांश से आगे जाती है, लेकिन अन्य विद्वानों ने लिखित स्रोतों, न्यू टेस्टामेंट पाठ के अन्य भागों के पीछे के स्रोतों की संभावना का पता लगाया है। न्यू टेस्टामेंट में एक अंतिम उदाहरण जो व्याख्यात्मक अंतर्दृष्टि को प्रकट करने की क्षमता के संदर्भ में स्रोत आलोचना के लिए उपयोगी हो सकता है, मुझे लगता है कि न्यू टेस्टामेंट में यह अधिक कठिन अनुच्छेदों में से एक है, और फिर से मेरा उद्देश्य इसे हल करने का प्रयास करना नहीं है या एक विस्तृत स्पष्टीकरण प्रदान करें, लेकिन 1 पीटर अध्याय 3 में प्रसिद्ध मार्ग, अध्याय 3 का अंत, श्लोक 18 से शुरू होता है, इसमें केवल कुछ लोग, कुल मिलाकर आठ, पानी के माध्यम से बचाए गए थे। और मैं वहीं रुकूंगा, लेकिन उस अंश के कारण कई नए नियम के छात्रों को यह समझाने की कोशिश में अपने बाल खींचने पड़े कि क्या हो रहा है और वास्तव में ईसा मसीह क्या कर रहे हैं।

एक स्पष्टीकरण जो दिया गया है वह यह है कि 1 पतरस का लेखक कहानी, सर्वनाश संबंधी कार्यों, रहस्योद्घाटन और डैनियल जैसे सर्वनाश संबंधी कार्यों को चित्रित कर रहा है, लेकिन विशेष रूप से एक सर्वनाश संबंधी कार्य जो कि अच्छी तरह से जाना जाता है, हालांकि यह पवित्रशास्त्र में शामिल नहीं है, फिर से एक सर्वनाशी कार्य एक दूरदर्शी होने के नाते, किसी की

दृष्टि का एक कथात्मक विवरण, कोई स्वर्ग पर चढ़ता है और अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में स्वर्गीय दर्शन और भविष्य की भविष्यवाणियां आदि देखता है। एक प्रसिद्ध सर्वनाश जो पुराने या नए नियम में नहीं है वह 1 हनोक की पुस्तक थी, और हनोक साहित्य में आपको उत्पत्ति अध्याय 6 की कहानी, बाढ़ की कहानी के कई संदर्भ मिलते हैं, जो वर्णन से शुरू होती है मनुष्य के पुत्र आकर मनुष्य की पुत्रियों के साथ रहने लगे, और परमेश्वर के पुत्र आकर मनुष्य की पुत्रियों के साथ रहने लगे। 1 हनोक में, इसे स्वर्गदूत प्राणियों के संदर्भ के रूप में समझा जाता है जिन्होंने अपना अधिकार स्थान छोड़ दिया था, और अब उन्हें नूह के दिनों में, उत्पत्ति अध्याय 6 में स्वर्गदूत प्राणियों ने जो किया था, उसके कारण चित्रित किया गया है, उन्हें अब चित्रित किया गया है अंधेरे में कैद और न्याय के दिन का इंतजार।

और कुछ लोग सुझाव देंगे कि हमने इस पाठ में जो पढ़ा है उसका स्रोत या पृष्ठभूमि यही है जो मैंने 1 पतरस अध्याय 3 से पढ़ा है, और कुछ लोग सुझाव देंगे कि पतरस के पास 1 हनोक और उसकी बताई गई कहानी, और उत्पत्ति 6 की कहानी की उसकी व्याख्या तक पहुंच थी। .तो फिर , व्याख्यात्मक रूप से, इसका मतलब यह है कि हमें इस बारे में बहुत अधिक चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी कि इस पाठ में शाब्दिक रूप से क्या चल रहा है और ये सभी चीजें कहाँ हो रही हैं, लेकिन उस स्पष्टीकरण के अनुसार, पीटर बस एक चित्र बना रहा होगा बुराई की शक्तियों पर यीशु की विजय को प्रदर्शित करने के लिए सामान्य सर्वनाशकारी वृत्तांत या कहानी। फिर, मेरा उद्देश्य इस बिंदु पर उस व्याख्या पर निर्णय देना नहीं है, बल्कि केवल यह उदाहरण देना है कि स्रोत की आलोचना पाठ को पढ़ने के तरीके में कैसे अंतर ला सकती है, और यह प्रदर्शित करने के लिए कि नए नियम में भी, स्रोत की आलोचना किस प्रकार होती है केवल सिनोप्टिक गॉस्पेल के बाहर। पुनः, मूल्यांकन के माध्यम से दो टिप्पणियाँ।

एक जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, नंबर एक, मुझे लगता है कि स्रोत आलोचना में खतरों में से एक, कम से कम जिस तरह से कुछ व्याख्याकार इसका उपयोग करते हैं, कभी-कभी दृष्टिकोण अटकलबाजी हो सकता है, खासकर जब हमारे पास स्रोत उपलब्ध नहीं होता है, विशेषकर तब जब हम इसका पुनर्निर्माण करने का प्रयास कर रहे हों। सिनोप्टिक गॉस्पेल जैसे लेखन में यह थोड़ा आसान हो सकता है, हालांकि वहां भी हमें रिश्ते के किसी भी सिद्धांत पर

बहुत अधिक भार डालने के मामले में सावधान रहना होगा, लेकिन यह निश्चित प्रतीत होता है कि गॉस्पेल में से एक ने स्रोत के रूप में कार्य किया है अन्य। लेकिन दूसरी ओर, कई बार जब हमारे पास स्रोत उपलब्ध नहीं होता है, तो कभी-कभी यह सुझाव देना अटकलबाजी हो सकती है कि एक लेखक किसी स्रोत पर चित्र बना रहा था और उसने यह या वह बदलाव किया, या यहां तक कि विस्तार से जाना कि वह कहां है स्रोत उस स्रोत की तारीख, सेटिंग, धर्मशास्त्र से आया होगा।

और यह मेरे दूसरे अवलोकन से संबंधित है। दिन के अंत में, हमें अभी भी पाठ से निपटना होगा जैसा कि हमारे पास है। भले ही नए नियम और पुराने नियम के लेखक पिछले स्रोतों पर निर्भर थे, जो कि वे थे, और उन स्रोतों की समझ और पुनर्निर्माण से हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि क्या हो रहा है, जैसे कि मुझे लगता है कि पहला पीटर 3 पाठ इसका एक अच्छा उदाहरण है साथ ही, हमें अभी भी अंतिम पाठ से निपटना है।

एक लेखक ने अपने उद्देश्यों को संप्रेषित करने के लिए उन स्रोतों को लिया है और उन्हें एक पाठ के रूप में रखा है। यह अब हमें एक और आलोचना में ले जाना शुरू कर देता है जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, वह है पुनर्लेखन आलोचना, जो अंतिम उत्पाद और पाठ पर अधिक ध्यान केंद्रित करना शुरू कर देगी और लेखक ने इसे एक साथ रखने में क्या किया है। इसलिए कभी-कभी स्रोत आलोचना उन स्रोतों की पहचान करने में बहुत मददगार हो सकती है जिन्होंने लेखक की अपनी रचना में योगदान दिया हो और यह समझने में कि लेखक ने उनका उपयोग कैसे किया है।

लेकिन दूसरी ओर, हमें अटकलों से बचना चाहिए और अंततः हमें मूल पाठ पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अब, ऐतिहासिक रूप से स्रोत आलोचना, विशेष रूप से नए नियम के अध्ययनों में, लेकिन ऐतिहासिक और तार्किक रूप से, स्रोत आलोचना ने एक तरह से आलोचना के दूसरे रूप के उद्भव को रास्ता दिया या जगह दी, जिसे फॉर्म आलोचना के रूप में जाना जाता है। मूल रूप से, फॉर्म आलोचना स्रोत आलोचना की तरह है, एक प्रयास, कम से कम आंशिक रूप से एक प्रयास, नए और पुराने टेस्टामेंट के लिखित दस्तावेज़ के पीछे जाने के लिए, व्यक्तिगत रूपों,



विशेष रूप से मौखिक रूपों को पुनर्प्राप्त करने, उजागर करने के लिए, जिन्होंने अंतिम में अपना रास्ता बना लिया है। संघटन।

इसलिए आलोचना अक्सर जिस रूप में होती है, वह दस्तावेजों को देखती है और रूपों को अलग करती है और उनके मौखिक इतिहास का पता लगाने की कोशिश करती है। इस स्वरूप का विकास कैसे, कहाँ हुआ? पाठ में अलग-अलग इकाइयों, अलग-अलग रूपों को देखना। यह देखते हुए कि मुझे क्या मिला, क्या मैं उस फॉर्म की सेटिंग निर्धारित कर सकता हूँ और वह फॉर्म कैसे विकसित हुआ, जिसका परिणाम अब मुझे पुराने और नए टेस्टामेंट पाठ में मिलता है।

तो आप देख सकते हैं कि आलोचना के अक्सर अलग-अलग पहलू होते हैं। यह पाठ में व्यक्तिगत रूपों, व्यक्तिगत इकाइयों और उनके रूप और उनके आकार और उनके कार्य का अध्ययन कर सकता है, लेकिन यह उस रूप की मूल सेटिंग और उसकी मौखिक परंपरा और उसके विकास का अध्ययन तब तक कर सकता है जब तक कि उसे इसमें शामिल नहीं किया गया। मूलपाठ। इसलिए मैं कहता हूँ कि रूप की आलोचना भी कुछ मायनों में एक ऐतिहासिक प्रयास है क्योंकि यह अक्सर रूप के प्रसारण की मौखिक अवधि को तब तक उजागर करने का प्रयास करती है जब तक कि इसे लिखित पाठ में शामिल नहीं किया गया था।

हालाँकि, जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, संभवतः रूप आलोचना का सबसे उपयोगी पहलू, मुझे लगता है, अलग करना है, अलग करना नहीं, बल्कि पाठ के भीतर व्यक्तिगत इकाइयों और रूपों की पहचान करना और वे क्या हैं और वे कैसे कार्य करते हैं और कैसे करते हैं व्याख्या में अंतर लाओ। लेकिन जहां तक आलोचना की बात है और यह कैसे काम कर सकती है, तो मैं आपको पुराने और नए टेस्टामेंट दोनों से कुछ उदाहरण फिर से देना चाहता हूँ। और फिर, मेरा लक्ष्य हमेशा यह सुझाव देना नहीं है कि मैं इन उदाहरणों से सहमत हूँ या उनका मूल्यांकन करना है, बल्कि सिर्फ यह प्रदर्शित करना है कि स्रोत आलोचना या रूप आलोचना कैसे काम कर सकती है।

पुराने नियम में, स्तोत्र की आलोचना सबसे प्रमुखता से स्तोत्र में विकसित हुई, जहाँ हरमन गुंकल नामक एक जर्नल विद्वान स्तोत्र के कुछ रूपों की पहचान करने और उन्हें वर्गीकृत करने और उनकी सेटिंग और उनके कार्य और इस तरह की चीजों पर चर्चा करने में सक्षम थे। पुराने नियम में आलोचना बनाने का एक सामान्य दृष्टिकोण, और वास्तव में कई दिलचस्प और कभी-कभी उपयोगी टिप्पणियाँ हैं जिन्हें पुराने नियम के साहित्य के रूप कहा जाता है जो एक रूप की चार विशेषताओं की पहचान करने के दृष्टिकोण का पालन करते हैं। यानी, फॉर्म की संरचना को देखते हुए, इसे एक साथ कैसे रखा जाता है और इसकी संरचना कैसे की जाती है, फिर शैली को देखते हुए, फॉर्म को किस प्रकार का लेबल दिया जाता है, हम किसके साथ काम कर रहे हैं, यह किस प्रकार का फॉर्म है? फिर फॉर्म की संभावित सेटिंग को देखते हुए, किस सेटिंग ने इस तरह के फॉर्म को जन्म दिया होगा? और हम बस एक क्षण में एक उदाहरण देंगे।

और फिर इरादा, इस फॉर्म का कार्य या उद्देश्य क्या है? यह क्या करने का प्रयास कर रहा है? उदाहरण के लिए, मैं आपको एक सामान्य रूप से एक उदाहरण देता हूँ जिसे हम संयुक्त राज्य अमेरिका में उपयोग करते हैं, और मुझे यकीन है कि यह अन्यत्र भी सच है, और वह किराने की सूची है। उन चार विशेषताओं को देखते हुए, यदि मैं किराने की सूची लेता हूँ, तो आप इसकी संरचना पर ध्यान देंगे, किराने की सूची की एक अनूठी संरचना होती है। इसमें कथा और स्पष्टीकरण शामिल नहीं है, आमतौर पर यह केवल उन वस्तुओं की एक सूची है जिनकी फिर से बहुत सीमित व्याख्या हो सकती है, लेकिन यह बहुत कम व्याकरण वाली वस्तुओं की एक सूची है, या फिर, कोई गद्य या कथा नहीं है, बल्कि बस एक साधारण सूची है आइटमों का समय बहुत लंबा है।

ऐसी संरचना की शैली एक किराना सूची होगी, वह लेबल होगा, शैली लेबल जिसे हम इस प्रकार का रूप देते हैं जो केवल उन वस्तुओं की एक सूची देता है जिन्हें कोई किराने की दुकान पर खरीदेगा, विशेष रूप से खाद्य पदार्थ। तीसरी बात, सेटिंग, किराने की दुकान की सेटिंग। जैसे कि मैं किराने की दुकान पर जा रहा हूँ, मैं एक सूची बनाऊंगा, और इसलिए सेटिंग यह है कि आने वाले सप्ताह या महीने या किसी भी चीज़ के लिए किराने का सामान खरीदने के लिए किराने की दुकान की यात्रा की जाएगी।

और फिर अंततः, इरादा बस मुझे यह याद दिलाने का है कि जब मैं दुकान पर पहुंचूं तो मुझे क्या खरीदना है। और इसी प्रकार, पुराने नए नियम में भी, रूपों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जा सकता है या उस तरह की जांच की जा सकती है। उदाहरण के लिए, भजनों के लिए, यह कोई नई बात नहीं है कि भजन विभिन्न प्रकार के होते हैं।

बहुत ही बुनियादी स्तर पर भी, आप सीखते हैं कि स्तुति के भजन हैं, विलाप के भजन हैं, आदि, आदि। एक बहुत ही सामान्य भजन, और ये सभी भजन इज़राइल राष्ट्र के पूजा जीवन के भीतर उभरे हैं और इनका उपयोग किया गया था। विभिन्न सेटिंग्स. एक बहुत ही सामान्य स्तोत्र एक विलाप, एक विलाप का स्तोत्र है।

इसकी एक बहुत ही सामान्य संरचना है, उनमें से अधिकांश की एक समान संरचना है, शुरुआत, नंबर एक, भगवान के आह्वान के साथ। नंबर दो, स्वयं विलाप, जो मूल रूप से इस बात का वर्णन है कि चीजें कितनी बुरी हैं या हो गई हैं। फिर नंबर तीन, भजनहार द्वारा आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति।

नंबर चार, एक याचिका. और फिर पांच, अक्सर एक प्रतिज्ञा में समाप्त होते हैं, जहां भजनहार अपनी प्रार्थना का उत्तर देने के लिए भगवान से वादा करता है। स्तोत्र का एक और दिलचस्प प्रकार वह है जिसे प्रवेश स्तोत्र के नाम से जाना जाता है।

भजन अध्याय 15 में इसका एक उदाहरण है। हालाँकि, फिर भी, उनमें से कई हैं, भजन अध्याय 15, मुझे लगता है, एक प्रवेश भजन का एक दिलचस्प उदाहरण प्रदान करता है। यह आरम्भ होता है, हे प्रभु, तेरे पवित्रस्थान में कौन वास कर सकता है? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है? जिसका चाल-चलन निर्दोष है और जो धर्म के काम करता है, जो हृदय से सत्य बोलता है, जिसकी जीभ पर निन्दा नहीं होती, जो अपने पड़ोसी का बुरा नहीं करता और अपने साथी पर कलंक नहीं लगाता, जो नीच मनुष्य का तिरस्कार करता है परन्तु उसका आदर करता है। जो

यहोवा का भय मानता है, जो दुःख होने पर भी अपनी शपथ का पालन करता है, जो बिना ब्याज के अपना रूपया उधार देता है, और निर्दोष के विरुद्ध वधू ग्रहण नहीं करता।

जो ये काम करता है, वह कभी न डगमगाएगा। और ध्यान दें कि यह स्तोत्र किस प्रकार संरचित है। इसकी शुरुआत उपासक के एक प्रश्न से होती है, हे प्रभु, आपके पवित्रस्थान में कौन निवास कर सकता है? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है? और फिर दो से पांच में शेष भजन पवित्रस्थान में प्रवेश और भगवान की पवित्र पहाड़ी के प्रवेश द्वार के लिए शर्तों के रूप में उस प्रश्न का उत्तर है।

इसके लिए सेटिंग भक्तों का मंदिर में वास्तविक आगमन हो सकता है क्योंकि वे भगवान की पूजा करने आए थे। और इसलिए इरादा उन लोगों के लिए आवश्यकताओं को निर्धारित करने का होगा जो पूजा में भाग लेने के लिए मंदिर में आएंगे। एक और आम रूप जो आपको भजनों के बाहर देखने को मिलता है, लेकिन आप इसे विशेष रूप से भविष्यवाणी साहित्य में पाते हैं, जिसे पुराने नियम की कॉल कथा के रूप में जाना जाता है, जिसे आप विशेष रूप से कुछ भविष्यवक्ताओं की शुरुआत में पाते हैं।

लेकिन मूसा के जीवन में निर्गमन के शुरुआती अध्यायों में एक और दिलचस्प उदाहरण है। एक भविष्यसूचक कॉल कथा मूल रूप से इज़राइल के इतिहास में एक व्यक्ति, एक भविष्यवक्ता या मूसा जैसे किसी व्यक्ति के सामने प्रकट होने और उसका सामना करने, और उन्हें आदेश देने और उन्हें सेवा के लिए बुलाने का एक विवरण था। और यह दिलचस्प हो गया और जब आप कॉल आख्यानों की तुलना करना शुरू करते हैं तो एक सामान्य संरचना प्रतीत होती है।

आप यशायाह अध्याय छह में एक पाते हैं। आपको यहजेकेल अध्याय एक और तीन में एक और मिलता है। आप यह भी पाते हैं, जैसा कि मैंने अभी उल्लेख किया है, आप निर्गमन की पुस्तक के पहले तीन अध्यायों में भी एक पाते हैं, जहां भगवान व्यक्तियों के सामने प्रकट होते हैं और उन्हें सेवा के लिए बुलाते हैं और नियुक्त करते हैं।

अब, पुराने नियम की कॉल कथा की संरचना में निम्नलिखित में से अधिकांश या अधिकांश को शामिल किया गया प्रतीत होता है। नंबर एक, भगवान के साथ टकराव, जहां भगवान का सामना होगा और भगवान व्यक्ति के सामने प्रकट होंगे। दूसरा, ईश्वर का आदेश होगा, जहां ईश्वर वास्तव में किसी निश्चित गतिविधि या निश्चित सेवा के लिए पैगंबर या व्यक्ति को आदेश देता है या बुलाता है, उसके बाद नंबर तीन, पैगंबर की आपत्ति होती है।

सो यशायाह को स्मरण करो, मुझ पर हाथ, मैं अशुद्ध होठोंवाला मनुष्य हूं। निर्गमन वृत्तांत में और भी अधिक व्यापक रूप से, जब परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया, तो वह केवल एक नहीं बल्कि प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला, आपत्तियों की एक श्रृंखला लेकर आया। आपत्तियों के बाद भगवान द्वारा आश्वासन दिया जाता है, संख्या चार, जो आपत्ति पर काबू पाता है।

और फिर पांचवे नंबर पर एक संकेत दिया गया है। और विशेष रूप से निर्गमन एक से तीन में मूसा की बुलाहट में ये सभी शामिल हैं। तो फिर दिलचस्प बात यह है कि इससे पता चलता है कि मूसा का आदेश एक भविष्यवक्ता का आदेश है।

मूसा को एक भविष्यवक्ता के रूप में देखा जा रहा है जिसे अब ईश्वर द्वारा बुलाया और नियुक्त किया जा रहा है। तब यह सेटिंग शायद दूतों के लिए अपनी साख दिखाने की प्राचीन आवश्यकता होगी। और फिर भविष्यसूचक कॉल कथा का इरादा भविष्यसूचक संदेश और गतिविधि को प्रमाणित करना होगा।

तो जो कुछ भी मूसा करता है और कहता है, वह सब कुछ जो यशायाह करता है या कहता है, या वह सब कुछ जो यहजेकेल करता है, अब मान्यता प्राप्त करता है या अब प्रामाणिकता प्राप्त करता है क्योंकि यह एक कॉल कथा, भगवान द्वारा एक आयोग पर वापस जाता है। तो ये इस बात के उदाहरण हैं कि पुराने नियम के कई ग्रंथों में अलग-अलग रूपों की पहचान करके और उनकी संरचना को देखकर, फॉर्म की शैली क्या है, उनकी सेटिंग क्या हो सकती है, वह सेटिंग जिसने इसे जन्म दिया होगा, फॉर्म की आलोचना कैसे काम कर सकती है। ऐसे रूप, और तब उन रूपों का कार्य या इरादा स्पष्ट हो सकता है जब हम बाइबिल के पाठ को देखते हैं और

समझने की कोशिश करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नए नियम में आलोचना का स्वरूप पुराने नियम की तुलना में थोड़ा अलग ढंग से विकसित हुआ है।

लेकिन न्यू टेस्टामेंट में आलोचना आमतौर पर जिस रूप में जुड़ी थी, उसके तीन पहलू थे। और न्यू टेस्टामेंट में फॉर्म आलोचना, स्रोत आलोचना की तरह, सबसे पहले विकसित हुई, इसकी शुरुआत गॉस्पेल में हुई, विशेष रूप से मैथ्यू, मार्क और ल्यूक द्वारा सिनोप्टिक गॉस्पेल में। और आलोचना का स्वरूप अक्सर ऐतिहासिकता के मुद्दों, गॉस्पेल की ऐतिहासिकता, यीशु के कथनों की ऐतिहासिकता और उनके द्वारा किए गए कार्यों से अधिक निकटता से जुड़ा होता था।

लेकिन गॉस्पेल में, आलोचना के स्वरूप में, विशेष रूप से गॉस्पेल में इसकी शुरुआत में, तीन अलग-अलग पहलू शामिल हैं। नंबर एक, फॉर्म की आलोचना उन रूपों पर केंद्रित है, जो गॉस्पेल में पाए जाने वाले अलग-अलग रूप हैं, और विद्वान विभिन्न रूपों को लेबल करेंगे, जैसे कि, वे एक घोषणा कहानी जैसे लेबल बनाएंगे, एक कहानी जो यीशु द्वारा की गई किसी चीज़ के बारे में बताई गई है या कहा गया है कि इसका चरमोत्कर्ष एक कहावत या घोषणा, या चमत्कार की कहानियों, या यीशु की कही बातों, या भविष्यवाणियों, या लौकिक कहावतों, या प्रवचनों के साथ होता है। वे सभी गॉस्पेल में पाए जाने वाले विभिन्न रूपों को दिए गए विशिष्ट लेबल थे।

इसलिए रूप आलोचना का पहला चरण गॉस्पेल में पाए गए विभिन्न रूपों का पता लगाना, पहचानना और लेबल करना था। उदाहरण के लिए, मार्क, मार्क अध्याय 2, और श्लोक 15 से 17 में, मुझे लगता है कि यही वह पाठ है जो मैं चाहता हूँ, मैथ्यू अध्याय 2, 15 से 17। जब यीशु लेवी के घर पर भोजन कर रहे थे, तो कई कर संग्रहकर्ता और पापी उनके साथ भोजन कर रहे थे। उसे और उसके चेलों को, और उसके चेलों को, क्योंकि बहुत से लोग उसके पीछे हो लेते थे।

जब शास्त्रियों ने, जो फरीसी थे, उसे पापियों और महसूल लेनेवालों के साथ भोजन करते देखा, तो उसके चेलों से पूछा, वह महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों भोजन करता है? यह सुनकर यीशु ने उन से कहा, वैद्य स्वस्थों को नहीं, परन्तु बीमारों को है। मैं धर्मियों को नहीं परन्तु

पापियों को बुलाने आया हूं। इसे आमतौर पर विद्वानों द्वारा एक उद्घोषणा कहानी के उदाहरण के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

इस संक्षिप्त कहानी पर ध्यान दें जो यीशु की घोषणा या कहावत के साथ समाप्त होती है, और आमतौर पर इस रूप के साथ, ध्यान उस कहावत पर केंद्रित हो जाता है जो कहानी को चरम पर पहुंचाती है। इसलिए नए नियम में, विशेष रूप से गॉस्पेल में, रूप की आलोचना का पहला लक्ष्य विभिन्न रूपों की पहचान करना और उन्हें लेबल करना था। फॉर्म आलोचना की दूसरी विशेषता सिट्ज़ इम लेबेन की पहचान करना था, जो जर्मन शब्द है जिसका अर्थ जीवन में सेटिंग है।

अर्थात्, वह सेटिंग जिसने स्वरूप को जन्म दिया, और आमतौर पर वह सेटिंग प्रारंभिक चर्च के जीवन में कुछ थी। आरंभिक चर्च के जीवन की किस घटना या किस स्थिति ने इस रूप को जन्म दिया होगा, इस रूप का निर्माण किया होगा? धारणा यह है कि यह फॉर्म किसी चीज़ के लिए उपयोगी था। धारणा यह है कि लेखक केवल कोरा इतिहास नहीं लिख रहे थे, बल्कि रूपों ने प्रदर्शित किया कि यह साहित्य प्रारंभिक चर्च के जीवन में किसी चीज़ के लिए उपयोगी था।

इसलिए प्रयास न केवल स्वरूप को पहचानने और लेबल करने का था, बल्कि सेटिंग की पहचान करने का भी था, प्रारंभिक चर्च के जीवन में कुछ। यह पूजा है, चाहे यह झूठी शिक्षा के साथ संघर्ष हो, या यहूदी धर्म के साथ, या चर्च में कुछ सेटिंग, चर्च की शिक्षा जिसने इस रूप को जन्म दिया। और फिर अंततः, रूप आलोचना का तीसरा तत्व था संचरण का इतिहास।

अर्थात् मौखिक अवस्था। इस रूप को, फिर से, बढ़ावा दिया गया होगा, प्रारंभिक चर्च में किसी सेटिंग में उत्पन्न हुआ होगा, लेकिन तब तक मौखिक रूप से पारित किया गया होगा जब तक कि यह बाइबिल पाठ में शामिल नहीं हो जाता। और इस प्रकार आलोचना इस मौखिक चरण का अध्ययन करती है।

यह बाइबिल पाठ में शामिल किए जाने तक किए गए परिवर्तनों, इस फॉर्म के विकास का अध्ययन करता है। यह इन रूपों के संचरण का पता लगाता है। संभवतः इन तीनों में से, बाइबिल

की व्याख्या और व्याख्याशास्त्र के लिए, इन तीनों में से सबसे अधिक उपयोगी, मुझे लगता है, नंबर एक रही है, रूप की पहचान करने की क्षमता और इसे केवल लेबल करने के लिए लेबल करने की क्षमता नहीं, बल्कि रूप की पहचान करने की क्षमता एक तरह से जो व्याख्या के लिए और बाइबिल पाठ को समझने में सहायक हो।

उदाहरण के लिए, यदि मैं किसी चीज़ को एक उद्घोषणा कहानी के रूप में पहचानता हूँ, तो उसका ध्यान, मेरी व्याख्या का ध्यान चरम कथन पर होगा। वह मुख्य बिंदु की पंचलाइन की तरह होगी। रूपों की पहचान करने और आलोचना के स्वरूप का एक और दिलचस्प पहलू यह है कि यह हमें बाइबिल पाठ के बड़े हिस्सों को समझने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए, मैथ्यू अध्याय 8 और 9, मैथ्यू अध्याय 8 और 9 में, यह एक लंबा खंड प्रतीत होता है जिसे घटनाओं के घटित होने के क्रम के अनुसार कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है, लेकिन अध्याय 8 और 9 को व्यवस्थित किया गया प्रतीत होता है एक सामान्य रूप पर आधारित, वह है चमत्कारी कहानियाँ। मैथ्यू अध्याय 8 और 9 केवल चमत्कारिक कहानियों की एक श्रृंखला है, इसलिए आलोचना यह तर्क प्रदान करती प्रतीत होती है कि मैथ्यू 8 और 9 को कैसे व्यवस्थित किया गया है। अगले सत्र में मैं फॉर्म आलोचना पर चर्चा और बातचीत जारी रखना चाहता हूँ।

बस संक्षेप में, हम इसे समाप्त करेंगे और दृष्टान्तों और सुसमाचारों से एक उदाहरण देखेंगे और आलोचना का यह रूप हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि दृष्टान्त कैसे कार्य करते हैं और हम उन्हें कैसे पढ़ सकते हैं। फिर हम इस त्रय की तरह आलोचना के तीसरे रूप की ओर बढ़ेंगे जो ऐतिहासिक और तार्किक रूप से विकसित हुआ है, और वह है पुनर्लेखन आलोचना।